ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)

बुलेटिन संख्या-६०
दिनांक-शुक्रवार,१४ दिसम्बर,२०१८

टेलीफोन -०६२७४-२४०२६६

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः २६.८ एवं ६.२ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ८४ सुबह में एवं दोपहर में ५० प्रतिशत, हवा की औसत गति ०.६ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण १.५ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ५.४ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में १३.२ एवं दोपहर में २३.२ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा तथा सुबह में हल्का कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(१५ से १६ दिसम्बर, २०१८)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी १५ से १६ दिसम्बर,२०१८ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम गरज वाले बादल बन सकते हैं। उत्तर बिहार में कहीं-कहीं हल्की वर्षा या बूंदा-बूंदी हो सकती है। १७ दिसम्बर के आस-पास बेगुसराय, मुजफ्फरपुर, मधुबनी एवं पूर्वी चम्पारण जिलों के कुछ स्थानों पर छिटपूट वर्षा होने का अनुमान है। बेगुसराय जिला में हल्की वर्षा की संभावना है। इसका प्रभाव समस्तीपुर जिला के दक्षिणी भागों में देखा जा सकता है।
- अधिकतम तापमान २५ से २६ डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान ८ से १० डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है। सुबह में कुहासा छा सकता है।
- औसतन ५ से १० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से १५ से १६ दिसम्बर के बीच पुरवा हवा तथा उसके बाद पछिया हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में करीब ८५ से ९० प्रतिशत तथा दोपहर में ४५ से ५५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- हल्की वर्षा/बुंदा-बुंदी की संभावना को देखते हुए कृषि कार्य जैसे कीटनाशक दवाओं के छिड़काव आदि में सर्तकता बरतने की आवश्यकता है। खड़ी फसलों में सिंचाई के लिए किसान भाई इंतजार कर सकतें हैं।
- किसान भाई को सलाह दी जाती है कि गेहूँ की पिछात किस्मों की बुआई २५ दिसम्बर से पहले संमपन्न करें। इसके बाद बुआई करने पर उपज में भारी कमी होती है।
- गेहूँ की पिछात किस्मों के लिए *पी०बी०डब्लू० ३७३, एच०डी० २२८५, एच०डी० २६४३, एच०यू०डब्लू० २३४, डब्लू०आर० ५४४, डी०बी०डब्लू० १४, एन०डब्लू० २०३६, एच०डी० २९६७ तथा एच०डब्लू० २०४५* किस्में इस क्षेत्र के लिए अनुशसित हैं। प्रति किलोग्राम बीज को २.५ ग्राम बेबीस्टीन की दर से पहले उपचारित करें। पुनः बीज को क्लोरपायरिफॉस २० ई०सी० दवा का ८ मि०ली० प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। बुआई के पूर्व खेत की जुताई में ४० किलोग्राम नेत्रजन, ४० किलोग्राम फॉसफोरस एवं २० किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर डालें। जिन क्षेत्रों में फसलों में जिंक की कमी के लक्षण दिखाई देती हो वैसे क्षेत्रों के किसान खेत की अन्तिम जुताई में जिंक सल्फेट २५ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। छिटकबाँ विधि से बुआई के लिए प्रति हेक्टेयर १५० किलोग्राम तथा सीड ड्रील से पंक्ति में बुआई के लिए १२५ किलोग्राम बीज का व्यवहार करें।
- गेहुँ की फसल जो २१-२५ दिनों की हो गई हो, में प्रति हेक्टेयर ३० किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें। वर्षा नहीं होने के स्थिती में फसल की सिंचाई कर उर्वरक डालें।
- गेहूँ की फसल में पहली सिंचाई के बाद (रोपाई के ३० से ३५ दिन में) कई प्रकार के खर-पतवार उग आते है। जिनका विकास काफी तेजी से होता है और जो गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रन हेतु सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्रम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्राम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में आसमान साफ रहने पर छिड़काव करें।
- प्याज के ५०-५५ दिनों के तैयार पौध की रोपाई करे। इसके लिए खेत को समतल कर छोटी-छोटी क्यारियाँ बनावें। क्यारियों का आकार, चौड़ाई १.५ से २.० मीटर तथा लम्बाई सुविधानुसार ३-५ मीटर रखे। प्रत्येक दो क्यारियों के बीच जल निकासी के लिए नाले अवश्य बनावें। पाँक्ति से पाँक्ति की दुरी १५ से०मी०, पौध से पौध की दुरी १० से०मी० पर रोपाई करे। खेत की तैयारी में १५ से २० टन गोबर की खाद, ६० किलोग्राम नेत्रजन, ८० किलोग्राम फॉसफोरस, ८० किलोग्राम पोटास तथा ४० किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर का व्यवहार करें।
- आलू की फसल में निकौनी करें। निकौनी के बाद नेत्रजन उर्वरक का उपरिवेशन कर आलू में मिट्टी मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें। आलू में कीट-व्याधी की निगरानी करें।
- सब्जियों वाली फसल में निकौनी करें। टमाटर की फसल में फल छेदक कीट की निगरानी करें। इसके पिल्लू फल में घुसकर अन्दर से खाकर पूरी तरह फल को नष्ट कर देते हैं, जिससे प्रभावित फलों की बढ़वार रुक जाती है और वे खाने लायक नहीं रहते, पूरी फसल बरबाद हो जाती है। फल छेदक कीट से बचाव हेतु खेतों में पक्षी बसेरा लगायें। कीट का प्रकोप दिखाई देने पर सर्वप्रथम कीट से क्षतिग्रस्त फलों की तुराई कर नष्ट कर दें एवं उसके बाद स्पीनेसेड ४८ ई०सी०@ १ मि०ली० प्रति ४ लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।

आज का अधिकतम तापमानः २६.८ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से २.४ डिग्री अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः ६.२ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.७ डिग्री कम

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी